नवागढ़ (नंदपुर) की पुरा सज़्पदा और मांगलिक प्रतीक

- ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत' (टीकमगढ़)

भारत विभिन्न संस्कृतियों से मंडित ऐसा देश है, जहाँ करोड़ों वर्ष प्राचीन साक्ष्य उपलज़्ध हैं। इसके विभिन्न प्रदेशों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पौराणिक धरोहर संरक्षित हैं। उन्हीं में से भारत हृदय बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिकता भी अतिप्राचीन है। इसके नामकरण के संबंध में अनेक मान्यताएँ एवं कथानक हैं। इसके चित्रकूट (रामायण), दशार्ण (महाभाष्य, मार्कण्डेय पुराण, मेघदूत), चेदि (महाभारत), गोल्लदेश (कुवलयमाला कहा), चि-चि-टो (चीनी यात्री ह्वेनसांग), युद्धदेश (विष्णु धर्मोज़र पुराण), जीजाक भक्ति (इनसाइज़्लोपीडिया ब्रिटानिका), जुझौति (स्कंधपुराण), गौंडवाना, कर्णावती, डाहल, वज्रदेश, मध्यदेश, चन्द्रावती, विन्ध्येलखण्ड, पिप्पलादि, पद्मावती, गोलापुर, बुन्देलखण्ड (छत्र प्रकाश एवं वीरसिंह देव चरित्र) आदि नाम प्राचीनकाल से आज तक रखे गये हैं। बुंदेलखण्ड के झांसी संभाग के जिला ललितपुर में देवगढ़, बालावेहट, चाँदपुर, दुधही, सेरोन, मदनपुर, कारीटोरन, गिरार, नवागढ़ (नंदपुर), सड़कौरा, अंजनी, बानपुर, सीरोन, जहाजपुर, दैलवाड़ा आदि अनेक तीर्थ एवं प्रागैतिहासिक नगर विद्यमान हैं। जिनमें नवागढ़ क्षेत्र की पुरासज़्पदा एक विशिष्टकाल की संस्कृति को अभिव्यक्त करती है।

नवागढ़ (नंदपुर) में प्राप्त प्रतिमाएँ एवं शिल्प गुप्तकाल, प्रतिहारकाल तथा प्रारंभिक चंदेलकाल के हैं, जिनमें इनकी प्राचीनता जहाँ पाँचवी सदी सिद्ध होती है, वहीं पुरापाषाण कालीन औजार (2 से 5 लाख वर्ष पूर्व), कपमार्क (10 हजार वर्ष), शैलचित्र (5 से 8 हजार वर्ष), तीर्थंकर रॉककट इमेज (2 हजार वर्ष) से इसकी प्राचीनता स्वमेव सिद्ध हो रही है। नवागढ़ (नंदपुर) ग्राम नावई रमणीक, शांत, हरियाली युक्त पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य 24^0 से 35^0 अक्षांश एवं 78^0 से 80^0 देशांश पर कलरा नाला, पनया नाला, हर्रई नाला के मध्य स्थित है। यहाँ अतिशयकारी तीर्थंकर चक्रवर्ती एवं कामदेव त्रिपदधारी अरनाथ स्वामी का जैन तीर्थ, आचार्य गुफा, उपाध्याय गुफा, साधु गुफा, दूल्हादेव, देवासर, बगाजटोरिया (पहाड़ी) फाईटोन, जैन टोरिया, सिद्धों की टोरिया, बगाजमाता, हनुमान मंदिर, बावड़ी टीले प्रसिद्ध हैं।

मांगलिक प्रतीकों का विश्लेषणः-

1. आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने दंसणपाहुड में तीर्थंकर के शरीर पर एक हजार आठ शुभलक्षणों का उल्लेख किया है।

विरहदि जाव जिणिंदो सहसट्ठ सुलज़्खणेहिं संजुज़ो।

चउतीस अइसयजुदो सा पडिया थावरा भणिया ।।

एक हजार आठ शुभ लक्षणों से युक्त तथा चौंतीस अतिशयों से सहित तीर्थंकर भगवान् तब तक यहाँ विहार करते हैं, तब तक उनको स्थावर प्रतिमा कहा गया है। तीर्थंकर के शरीर में पाये जाने वाले एक हजार आठ शुभलक्षण कौन-कौन से हैं प्रकट करते हैं। श्रीवत्स, हाथ और पैरों में शंख, कमल, स्वस्तिक, अंकुश, तोरण, चंवर, सफेद छत्र, सिंहासन, ध्वज, दो मच्छ, दो कलश, कछुवा, चक्र, मेरु, इन्द्र पर्वत, नंदीपुर, गोपुर, चन्द्र, सूर्य, उज़म घोड़ा, व्यजन, बांसुरी, बीणा, मृदंग, दो पुष्पमाला, रेश्मीवस्त्र, बाजार, कुण्डल आदि सोलह आभूषण, फलों से युक्त उपवन, अच्छी तरह से पका हुआ धान का खेत, रत्नदीप, वज्र, पृथ्वी, लक्ष्मी, सरस्वती, कामधेनु, बैल, चूड़ामणि, महानिधि, कल्पबेल, सुवर्ण, जज़्बूवृक्ष, गरुण, नक्षत्र, तारका, राजभवन, गृह, सिद्धार्थवृक्ष, अष्टप्रातिहार्य, अष्टमंगल द्रव्य इन्हें आदि से लेकर एक सौ आठ शुभ लक्षण होते हैं और तिल मस्सा आदि नौ सौ व्यंजन होते हैं। यह सब मिलकर 1008 शुभ लक्षण कहलाते हैं।

2. अष्टप्रतिहार्य- अशोक वृक्ष, सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, दिव्यचमर, सिंहासन, भामंडल, दुंदुभि एवं छत्रत्रय ।

3. अष्टमंगल द्रव्य- सुवर्णमय झारी, तालपत्र (व्यजन), सुवर्णकलश, पताका, सुप्रतिष्ठ (ठौना), सफेद छत्र, दर्पण और चमर।

4. आचार्य जयसेन स्वामी ने प्रतिष्ठापाठ में माता के सोलह मांगलिक स्वप्नों का वर्णन किया है। बैल, ऐरावत, सिंह, स्वर्णकलश, अभिसिक्त लक्ष्मी, युगल पुष्पमाल, चन्द्रमा, सूर्य, युगलकलश, कमलयुक्त सरोवर, समुद्र, सिंहासन, स्वर्ग विमान, धरणेन्द्र भवन, रत्नराशि, निर्धूम अग्नि।

5. धवला पुस्तक प्रथम की टीका में आचार्य वीरसेन स्वामी ने मांगलिक द्रव्यों का वर्णन किया है।

सिद्धत्थ- पुण्ण कुंभो वंदनमाला य मंगल छज्ज।

सेदो वण्णो आदसणे य कण्णा य जच्चसोम ।।

सिद्धार्था (श्वेत सरसों), जल से भरा कलश, वंदनमाला, छत्र, श्वेतवर्ण, दपर्ण आदि अचिज्ञ मंगल हैं। बालकन्या तथा उज्ञम जाति का घोड़ा सचिज्ञ मंगल है तथा अलंकार सहित कन्या मिश्र मंगल हैं। इसके साथ जिनबिज्ञ, जिनयति, जिनेन्द्रदेव, जिनयति प्रतिमा, शास्त्र, पंचकल्याणक क्षेत्र, अष्टान्हिका पर्व को भी मंगल कहा जाता है।

6. प्रतिष्ठा पाठ में छत्र, रत्नदर्पण, ध्वजा, वस्त्र एवं मांगलिक आभूषणों का वर्णन मिलता है।

7. अभी तक प्राप्त अवशेषों में मांगलिक प्रतीकों में मुज्यतः खारबेल के शिलालेख में स्वस्तिक, मोहन जोदड़ों की सील में वृषभ, पुष्प चंदेरी के प्राचीन अभिलेख (ईसापूर्व द्वितीय सदी) नंदीपद (नद्यावर्त) स्वस्तिक, विहग, मीन, मिथुन, पद्म, शंख, त्रिरत्न, वज्र, ध्वज, तालपत्र (व्यजन), दर्पण, भद्रासन, जाव पडिरूवा आदि।

तीर्थंकरों के चिह्न, श्रीवत्स, छत्र, चमर, भामण्डल, चक्र, वृक्ष, गंगा देवी, यमुना देवी, मकरतोरण आदि प्राचीनकालीन शिल्पों में प्रायः सभी मूर्तियों में प्राप्त होते हैं। मथुरा में प्राक् कुषाण एवं कुषाण काल के आयागपट्टों में भी मांगलिक प्रतीक प्राप्त हुये हैं। नवागढ़ के प्राचीनतम् शैलचित्रों में वृषभ, हिरण, चक्र , सरोवर, पहाड़, वसतिका, सूर्य, केवलज्ञान (लोकपूरण चक्रिका) चक्षु पंचमगति प्रतीक, सप्तपंखुडी पुष्प आदि का अंकन यहाँ की पुराताज्विक एवं ऐतिहासिकता को दर्शाते हैं। इन मांगलिक प्रतीकों की जैनधर्म के मांगलिक प्रतीकों से अत्यधिक साज्यता है।

जैन पहाड़ी पर स्थित गुफा में पाषाण शिला पर उत्कीर्ण चरणयुगल तथा उत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा (रॉककट इमेज) इन शैलाश्रयों को जैन श्रमणों की साधना एवं जैन तीर्थ के निर्माण की हजारों वर्ष प्राचीन प्रारंभिक भूमिका का संकेत करते हैं। इनसे

सिद्ध होता है यहाँ जैन संस्कृति का क्रमिक विकास एवं संरक्षण होता रहा है। यह प्रसिद्ध साधना स्थल रहा है।

संगृहीत पुरासंपदा में तथा तीर्थंकरों के बिज्बों में भी मांगलिक प्रतीक उपलज्ध हैं।

आदिनाथ-वृषभ संवत् (1123), अजितनाथ-हस्ती, संभवनाथ-घोड़ा, सुमतिनाथ-विहग, पद्मप्रभ-कमल, चन्द्रप्रभ- चन्द्रमा, शीतलनाथ-वृक्ष, धर्मनाथ-वज्रदण्ड, शांतिनाथ-हिरण (1202) अरनाथ-मीन, मल्लिनाथ-कलश, नेमिनाथ-शंख, पार्श्वनाथ-सर्प (1568), महावीर-सिंह (1195). साधु परमेष्ठी-पिच्छी आदि। जैन पहाड़ी की एक गुफा से उपाध्याय परमेष्ठी की संवत् 1188 (1131ई.) की मांगलिक प्रतिमा तथा पहाड़ी के आसपास कमल कलिका युक्त कलात्मक सुन्दर हाथ एवं अन्य शिल्पों के साथ विशाल प्रतिमाओं की प्राप्ति यहाँ विशाल जैन मंदिरों का संकेत करते हैं। डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी वाराणसी के अनुसार चारों मानस्तंभों से सिद्ध होता है कि यहाँ चार मंदिर और रहे होंगे।

पाषाण पट्ट पर णमोकार मंत्र का अंकन विशेष मांगलिक प्रतीक है।

विभिन्न शिल्पों में मांगलिक प्रतीक - मानस्तंभ संवत् 1203 पर जंजीर युक्त घंटिका एवं उपाध्याय बिज्ब, गंगायमुना देवी, कलश युगल, अकलंक- निकलंक बिज्ब में शास्त्र एवं लेखनी, अलंकृत शिखर, त्रिछत्र एवं गजयुगल, परमेष्ठी बिज्ब में कमण्डलु पिच्छी, मंदिर छत वितान (आयागपट्ट) में कीर्तिमुख, अंबिका देवी में आम्रवृक्ष, फल एवं अरिहंत बिज्ब, इन्द्राणी के हाथ में चंवर, उड़ते हुए यक्ष का पुष्पहार, चंदेलशासक मदनवर्मन के हाथ में पुष्पमाला एवं अरिहंत बिज्ब में अष्ट प्रातिहार्य विशेष मांगलिक प्रतीक हैं।

इस प्रकार नवागढ़ (नंदपुर) में संगृहीत पुरावशेषों में प्राप्त मांगलिक प्रतीकों से सिद्ध होता है कि यहाँ विशेषरूप से जैन संस्कृति का क्रमिक विकास हुआ है। यह श्रमण संस्कृति एवं विद्याध्ययन, गुरुकुल का विशाल तीर्थ रहा है, जहाँ साधकों ने आकर साधना के साथ-साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक धरोहर का संवर्धन किया है। जैन तीर्थक्षेत्र से तीन कि.मी. पश्चिम में फाईटोन (फाइव स्टोन) शिलाओं के निकट जैन पहाड़ी पर स्थित शैलाश्रय एवं गुफाओं से प्राप्त पुरासज्पदा, दक्षिण में एक कि.मी. दूर बगाजटोरिया में स्थित चंदेलशासक मदनवर्मन के फलक पर

मांगलिक अरिहंत बिज़्ब, आचार्य गुफा से प्राप्त अज़्बिका देवी के शीर्ष पर अरिहंत बिज़्ब, चमरधारिणी इन्द्राणी, पूर्व दिशा में एक किमी. दूर चंदेल बावडी के पास मंदिर अवशेषों में अमलसार तथा उज़र दिशा में आधा किमी. दूर टीले से प्राप्त आक्रांतहस्ती युक्त सिंह एवं अमलसार इस क्षेत्र की विशालता का विस्तार कई किमी. में होने के संकेत करते हैं। मिट्टी एवं पाषाण के मनके यहाँ विशाल नगर एवं उसमें मानव सज़्यता का संकेत करते हैं, जिनका अन्वेषण करने से न जाने कितने रहस्यों एवं तथ्यों का उद्घाटित होना शेष है।

अरनाथ मूलनायक जिन प्रतिमा में श्रीवत्स, चंवर, मीन, पार्श्वनाथ बिज़्ब में माल्याधर एवं मृदंग, शांतिनाथ बिज़्ब में युगलहिरण, आदि तीर्थंकर बिज़्ब में मांगलिक प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त स्वतंत्र प्रतीक भी नवागढ़ संग्रहालय में संगृहीत हैं- शिखर कलश, अमलसार, चक्र, त्रिछत्र कलश, गजयुगल, माल्याधर, मंदिर, शिखर आदि। पचास से अधिक खण्डित तीर्थंकर बिज़्बों में चमर, छत्र भामंडल, अशोक वृक्ष, मृदंग, श्रीवत्स, माल्याधर, गजयुगल, मंगलकलश, मांगलिक प्रतीक रूप में उपलज़्ध हैं। जिनशासन में मांगलिक प्रतीक सुखसमृद्धि धर्माचरण का संकेत करते हैं।

प्रागैतिहासिक पुरातात्त्विक विरासत का क्षेत्र नवागढ़

- शोध छात्रा: श्रीमती अर्पिता रंजन, आरा

भारतीय संस्कृति में सभी कलाओं एवं विधाओं का समावेश है। प्राचीन भारत की प्राकृतिक विशेषता है कि यहाँ ग्रीष्म, वर्षा, शीत के साथ हेमंत, शिशिर एवं वसंत छह ऋतुओं से पर्यावरण हराभरा एवं समृद्धशाली रहता है। इसीलिये भारत के प्रत्येक प्रदेश की लोक कला, लोक संस्कृति, लोक परज़्पराएँ, लोक संगीत, लोक साहित्य, लोक शिल्प से लोक जीवन विभिन्न आयामों से उत्प्रेरित सृजनशीलता से अपनी पहचान बनाकर भारतीय संस्कृति की विराटता, वैशिष्टय से सज़्पूर्ण विश्व को चमत्कृत करती है।

विशेषतया बुन्देलखण्ड में सर्वधर्म समभाव, साहित्य, कला, शिल्प स्थापत्य का उद्भव एवं विकास का चर्मोत्कर्ष, समृद्धि, खुशहाली से जनजीवन सदैव उन्नतशील रहा है। यहाँ के शासकों ने कृषि को मुज़्यता प्रदान कर हजारों कूप, बावड़ी तथा सैकड़ों विशाल सरोवरों से भूमि की उर्वरा शक्ति द्वारा समृद्धि विकास के साथ आत्मशांति-संतोष हेतु अध्यात्म एवं भक्ति के आयाम भी स्थापित किये हैं। जिनसे जीवन में स्थिरता एवं पारस्परिक मैत्रीभाव विकसित होता रहा है।

इसी समृद्धि एवं धन वैभव के आकर्षण ने राज्य विस्तार, सैन्यबल एवं शक्ति का दुरुपयोग, वैमनस्य- ईर्ष्या ने युद्ध की विभीषिका को भी उद्दीप्त किया है। धन-वैभव की चाहत, काम वासना तथा राज्यलिप्सा ने सैकड़ों समृद्धशाली विशाल नगरों को भी ध्वस्त कराया है। जिसके उदाहरण महोबा, लासपुर, सलक्षणपुर, मदनपुर, दुधही, चांदपुर, सैरोंन, नवागढ़, अजयगढ़ एवं खजुराहो हैं।

जहाँ अन्य क्षेत्रों में मूर्ति एवं स्थापत्य के साक्ष्य मिले हैं वहीं नवागढ़ में इनके साथ पुरावैशिष्ट्य विलक्षण है।10 कि.मी. विस्तार वाले नवागढ़ में किये गये अन्वेशणों ने इसकी सज़्पन्नता, आध्यात्मिक साधना केन्द्र, गुरुकुल परज़्परा, महानगरीय संस्कृति के साथ सर्वधर्म समभाव, कला-शिल्प की समृद्धि के रहस्य उद्घाटित किये हैं।

यहाँ लोवर पैलियोलिथिक (2 से 15 लाख वर्ष) मिडिल पैलियोलिथिक (35 हजार से 2 लाख (वर्ष), अपर पैलियोलिथिक (12 हजार से 35 हजार वर्ष) प्राचीन पाषाण कालीन सज़्यता, हजारों वर्ष प्राचीन प्राकृतिक साधना शैलाश्रय,